

यः कर्म नैव विना दयः किं न, स्वर्गो वा वरः स्वर्गः
 लिखितं विना यमः, स्वर्गो वा वरः स्वर्गः
 यः धनं कमीला ० यः जायायः, कारुण्यं वरः स्वर्गः
 जीवजीव वदन्ति वरः स्वर्गः स्वर्गः ॥ १०८ ॥ धनं च ० धनं
 नदायः वरः स्वर्गः, लोकस्वर्गः नदवः स्वर्गः, स्वर्गः नदवः स्वर्गः ॥ धनं कमीला
 मीः गुणः वरः स्वर्गः, धनं कमीला ॥ १०९ ॥ धनं च ० धनं
 नदवः स्वर्गः, कल्याणः स्वर्गः, स्वर्गः नदवः स्वर्गः, स्वर्गः नदवः स्वर्गः
 यावत् नदवः स्वर्गः, यावत् नदवः स्वर्गः, यावत् नदवः स्वर्गः
 तादृशः स्वर्गः, पुष्टिः स्वर्गः, नदवः स्वर्गः, नदवः स्वर्गः
 वरः स्वर्गः, वरः स्वर्गः, वरः स्वर्गः, वरः स्वर्गः



(सम्भृत १५) २ धनहित्रिया आगमश्रया आसं
नसियाया त दडायाग दडाप्रदतया त सिद्धाय
रुचिकनभूगयाउगकन धनप्रस धनकादि च
सिद्धरूपमृक्वन ग्रसि समुवयन त्रितायादाडा न
पूजायाश्रया समस्त गानेक विद्वितायाक
पुत्रानमिष्वा पत्रमेष्वनीयागसिजनशकी एनान
श्रया ॥ मत्रमेष्वनया त सिजनशकी नहनीश्रया ॥

राया त आसनशकं नत्रसिप्रमात्रया त सिजनशकी
नाकश्रया निम्ररुकाहनया ॥

(सम्भृत १६) ६ अवलकृष्ट २ धनहित्रिया हाकसि
या कया त मिता ग सुलिदवयाक प्रादाडा दाडा
भक्तिपूजायादा चन्द्रविम्ब सूर्यविम्ब दानवि
दडायाग असगश १ कुमालिया त असगश १
पत्र ३ भवपूजा ॥ भक्ति यरुयादा पूजा क

(नमो ब्रह्माय ॥ अंगमद्वय निष्ठा शून्य हा इत्यत्र कृत्वा
चक्रपतिगनात् मलु लंग अंति किन्नर अंति गंजनर
अंति पञ्चभान्न ॥ कम सुवन मग पंचगव पाण धनिधम
ताधून काउ ॥ गुन मागा उपाध्याहा आसनस विष्णु वर्क पूजा
नरु गुन मलु ल पञ्च गंर सिधुन पाण पूजा पंचगव नरु
आदि पूजा देव पूजा माहोनि साधन आदि काय मलु
विन स्वानतन गालकाय मलु ल विष्णु न गुन वीर

चर्चापा किम्वद विषय नदिन मल्लान विष्णु सुना नरु ॥
धि उपाध्यान किन्नर पूजा कनर गंजनर पूजा गीत
रुन ॥ अपिनि पूजा गीत नरु वरु ॥ किन्नर ताव मलु
पूजा गीत ॥ पूर्वा देव पूजा धूप गीत नमरु ॥ देव
चर्चा प्रिचक्र ॥ ॥ कूल देव लख सूर्य उपाध्याय
अनतय ॥ अहाया चनास पंचगव नरु अहया लिबिनि
गुव सुपुनर वीज मगवाय रजपुन संवाय योन

मन्त्रां वज्रवा नादीयां ध्वनिगुलिज्जुं ध्वनि ध्वन
ध्वजा रावना ॥ ध्वप निवांजन विधि ध्वजा ध्वन्या स
जाय सुरुननय अका नमूव दक्षिणा तयक ॥ ॥
मीचक सवन वज्रवा नाहिया निरुहया नूगन स
वीज तयगुनि धाल स खानन स रावना ॥ ध्वप निरु
जन गालचा मत रुं ताय विधि ध्वजा ज धम्मा मि
नमूव जथां स ध्वनि तयक लपन उह

पंचवत्ततय ध्यादउन जनुनिगुनि निरुहया
दावक गय सुरुननय ॥ ॥ ध्वनि ध्यापानि निवा श
स हा ध्वजा दक्षिणा तय ॥ महादान वा कया स अयकाय
जजमानन ध्यापानि लउहाय ध्यापानि न देवया नूगन
स जनु मयागुनि धाल निवक धूनका उ देउया ध
स तया उ पति ध्यायत मानका धूनव कर्म या सुरुय
शिदि का वगाय सगा कर्म याय वाक ध्वजा ॥ ॥ ध्वनि

ॐ नमः श्रीवज्रसत्ताय ॥ दिन ऊरूयतिष्ठा विधिमाह ॥ आदी मधुलादि
सनविधि ॥ ॥ यद्भवत्सुलंकाययत् ॥ यश्च वीर्यादिचिह्न ४ कृतं
वसुयत् ॥ पूर्वनालवज्र विश्ववज्र ॥ दक्षिणवत्त पश्चिमवत्त यत्त उरु
व विश्ववज्र ॥ विदिग्ग वाचना मामकि पाशुला गश्च ॥ ततः कलमश्च
नयूजाविधि पूर्ववत्त कावयत् ॥ यश्चात्त अक्षदल कमलायनि किन
जह्नुयत्त पूषाया गये ॥ रावना ॥ मटितिभूत्या तानकर्त्त नञात्तव वि
श्वं कृतं ४ विश्ववज्र हितं कृतं काव किनज जहलिवज्र विषय

संवे कयली रूतं वज्रया कान पंजल संजात वितात मध्व प्रजग
संवाला विश्वकूलि समयी रूमी विराय ॥ ॥ नमः ॥ मटि सिव ज
सख नूपा लुप नाद रूतं गेला कवि जया पत्र ना मा वज्र कू का ना विश्वः
कुसुम सुग नव कालि लीला ल्या ४ लीट च न न दय ना ति क्रम कूध
नू कल्या नन लच जल मनी चि सच य ४ कूवल य निव नि विव जग
विश्व वृदान नील पीत ह विर मूल सर्व न व कृपा ड झा कला ल
लल जि क ४ य नि मूर्खं स कूर्म ॥ कूटिल न क व रु न गि न रं व

कामखना ललाट ह्यपश्चकपालगलावदनमुग्निल ॥ १ ॥ नील
षण् ॥ ४ ॥ शुभाला सुशोभायुवमन्त्रिनीलावकवलप्रिताहक
विलककल ॥ ४ ॥ ककादिनागनाज कककुलावजयभाधनायावज
मुष्टिद्वयपुलनं कनिष्ठाद्वयपुखलितं तज्जनीद्वयप्रसितमिति ॥ १ ॥
लाकविजयामुडया स्वारयक्षासमायनं सव्यकनायां अङ्गमया रमेवा
मायाकपालखद्वार्मदधना गज्जि काल ॥ ४ ॥ मुखनदिगमुख ॥ ४ ॥ खद्वगन
कूकानागप्रसितनस्मिदि ॥ ४ ॥ दगदिमिध्वाना कषाकूकाना कूदिग

दगका ॥ ४ ॥ पूसमययत् ॥ ॥ आकषण पाद्यादि धूप नीला लला
निनका ॥ स्नान पश्चमृत युका सुशुक्ल नकचद दक्षिणकाशान
कादुस्नानगर्भयुजा ॥ पूषत्या म ॥ जाय ॥ मरु ॥ ३ ॥ आ ॥ ४ ॥ ॥ यधमा ॥ अ
कानमुख ॥ धनकिननगाय ॥ ॥ ३ ॥ यधद्याटय २ सर्वदृष्टान कूह
दुसर्वदृष्ट्यादि ३ ॥ ०० ॥ दादि सपनिवानान कीलय २ कूह ३ ॥ ०० ॥ डा
यस्त्राहा ॥ पू ॥ ३ ॥ य ॥ द ॥ अ ॥ ने ॥ वा ॥ ०० ॥ ३ ॥ पूर्वस ॥ अ ॥ य
प्रिमधूनक ॥ य ॥ ४ ॥ यदानयुजा ॥ विधिकमथ ॥ ॥ ॥ ॥ लि कलन

पूजा मधुलपूजा यनानंदवपूजा माहति साधन ॥ ॥ अंलि कलक
 बलं स्वसहयाउ जातकमादिक्रियायादह ॥ ॥ वलादेकागो दु
 मलकूक्यादता ॥ ॥ सगरुदिकाका ॥ ॥ स्ववाअनऊरुयावि
 धि ॥ दसनकूऊरु मधुपस खउखिपात यअसुगका कामानिहय
 कांदायकउ २१ खिपातसद्या ॥ यखं पूर्वसवदशि ॥ ददि ॥ ॥ ददिनि
 सि ॥ यधिमउनगगसि ॥ ॥ उरुनसयिवागशि ॥ ॥ उलगतहलकसिला
 क यठहन पुकापाउ जलालपट दवदानूकया इखसपअदग

यतायद्या ॥ मधुलसमूलकवम पूर्ववानस जजआठन रक
 आठसार्वकर्मिक थअ २ दिगगदूयक ॥ कवमवा ॥ मरु ॥ उं वज
 नदह ॥ धनंदूकीनगगन गुनमधुलादि दगुलि यथामजात थंधू
 नकाउ ॥ मधुलस सर्वकर्मिक कवमलंखनहाय ॥ रावना ॥ मदि
 तिगुन्यतांनकरं नकाचक्रं विद्युकिननादि विधियनिकिलगहाय
 मधुलेख्य स्ववपांनिनूय पादभादिकायाययामितां कामिसूपरां
 गधपूषांयूलाकला गस्यम ॥ ॥ कानयत्यसाधितवाअमूजा समा

यस्या तदशाद्य ह्यनमूजसमायस्या समस्तलित्क वरत च नि समः
 तीत ह्यनवकं यथा विदित्वा न निवेत्त्य महाबागवत वीर्यव
 जामातृगन निग्नय यथै ह्यनदवगात्रकात्मकं ह्यलित्वा यथा ह्यन
 समयवकं यविर्ह विचित्र ॥ ॥ आ धू जी ॥ चक्रकायादिभूषिष्ठा
 न ॥ खद्वीजमयूषाकृष्ट तथगतदवीवहिरिष्टि ॥ स्नान ॥ यं ॥ यथ
 नाम ॥ ला धं ॥ उ त म जाप ॥ य ध म ॥ वलिविय वूँडा दिवजी ह्यादि ॥
 कनर ॥ यं ला धं ॥ उ त म जाप ॥ य ध म ॥ वलिविय वूँडा दिवजी ह्यादि ॥

मगाष्टकवस्ववृत्तान् ॥ ३ ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ स्वाहा ॥ यथैभ कृम विष्ठा
 न ॥ दवादि दूषाविष्ठा पूजा ॥ ॥ यनदम क्रिया जातकर्म नामा
 कम ह्यलयागनगा ॥ स्नानतन ॥ दक्षिण पूजा ॥ समुत्तमय आ ॥ ॥ ॥
 ७ ॥ ॥ ॥ सति अग्निहोत्र पत यत्रिगमाल ॥ ॥ ॥ नायकाय ॥ ७ ॥ चाय
 गुनमगुल लखवलिवियधूनका ॥ गुनरु यलिलक मकूट वज्रघ
 ४ ॥ गुवापाग पूजा अंगुनि कूलादिललाचकं यथैभ कृम विष्ठा
 सिधवत समाधि ॥ कलेग न्याम धूनका ॥ आ कपा ७ दिवजी सिजल

अग्निहोत्र

स्वाला सुगयाउ। सुजनिमि मया नाउ। लंख संह गुनू हउ। नतथाउ।
 ॥ **स्नान** च्छालनस्यं रावना ॥ नीलाजन ॥ य (अश्रय) दाव ॥ आयदनाउ। स्वः
 सिवा कन मिजल स्वावा तयं। होमया दातसु तय स्वावर्कं अग्निहोय
 नंपति च्छाला ॥ होमरावना ॥ विधिथं अग्नाहति धूनकाउ ॥ कर्मवि
 र्ययविक्रमन द्याय ॥ इहाउयाउ। कायसु दमका टवलिविज ॥ धनस्य
 काहति जाय जिधान धूं उनूं आयदनाउ। घृताहति स्वसिवा कन
 काहति पति च्छाला ॥ ॥ धनकू वदवया क्रियाया ह ॥

नयन च्छा कर्तुता ॥ धनकर्मदार्शन दमवलि मिह जग न
 कं सिध द्याय अलया लउ ज्ञान वलि मालायनय ॥ येश्र धाया ॥ म
 जायजा आचार्य कर्म जीउमान सकलसुखयाग ॥ किंथ माला ॥
 धकादिमधुलधिले स्नानतन ॥ ममसि ध्यान यधो लयादि वदतुः
 विठजं धूं मत मधिउयधिल्ल दधुनादि धूं शस अद्वानतस्यं ॥
 मगादव ॥ मधुल विसर्जनि गुनू पूजा सुधनतन दमवलि द्याय
 ॥ ॥ यानन ॥ १ ॥ पथमदिन जरू अग्निहोयन धनदिनस ॥

॥ ॥ लाकारुव ॥ निम्नज रु विहिउथं सकतां सः ॥ ॥ ॥ लाकारुव ॥ नि
 ॥ वासुगुनमगुल सिधुत ॥ आदिममय ॥ मगुलधिले ॥ अरुवतः
 मगुलविसर्जन ॥ वलिचुन ॥ नदिनमहकाव ॥ दगुनि करमन्याहः
 अग्निहोत्रन कुरुसाधन दवपूजा माहनि साधन दवताकृति यधः
 मा ॥ लाकारुव कृति याय दिवलि विय यधः कुरुनाम ॥ आगिनीन
 नै पूयमूजानतिन क वागम कुरुपताका न क मूख का वागम वि या
 सगका रुविन ॥ यधः जागिनाम ॥ यधः पागुलान ॥ नदिन सां सः

॥ गीत काला ॥ धंलि पूरुम याय म क दहन प्रवर्तन याय अनूना
 मयतिला मने ॥ मगुलधिले खानतन पूरुम पूर्ववत् ॥ सगुनत आगि
 धि ॥ दक्षिण पंचयागिनी सदान वलिचुन कलंख मूखसुद्ध ॥ ॥
 द्वितियदिनजरु गुनमगुलादि दाम दवताकृति सदाकृति य
 विकमथंशुन धूनहाता ॥ वतादम वतमाहन समावर्तनताकिमा
 दमवलि यधः धाना खानतन पूरुम गुनदक्षिण सगुनत ॥ २ ॥
 पावन ॥ ॥ दधुकरुयाथं धनदिनजरुस ॥ ॥ लाकारुव ॥ नि

श्रीवज्रहृत्वाय ॥ स्वधुस्तेतिगविहनादिकं पूनः ४ ह्युका नृद

मा धामान् परवह्निना वह्निना दिग्बलि पूजादिकं इति सा ह्येव
 नापि न दवतासंयुक्तं प्रथमा मित्रिप्रदक्षिणि कृत्य विष्णुसंयुक्तं
 लक्ष्मीनामस्तुतिपरित्यागं अथ यथा विष्णुनामस्तुतिप्रदक्षिणा मया
 पूनमन्यदा तत्सर्वं कुरुमहसि कुरुमहसि संवृद्धा दवतागत्सु वा न
 वक्ता जा दवतानां यद्विधिन्युवनाधिकं मित्रिकमायसीत्वा ॥ ३ ॥ इति
 सर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्ता यथा नूतनं न च ध्वं वृद्धविषयं पूनवागमनाय च
 ॥ ४ ॥ इति वज्रमशुलं ॥ सर्वधर्मान्तरादमधिभूतं धर्मं वादनं

पञ्चांग पञ्चम वा
नमो भगवते वासुदेवाय

कवचवज्रप्रतिविम्बवायम् ॥ तथेव सत्त्वादि कंच कृत्वा दिशिः
प्रतिमां यद्यविधि ॥ गदकं प्रतिष्ठा ३ लोक ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥
पञ्चमस्त ॥ गिज खलास्त ॥ मरु ॥ ॐ हूं गों कों जूं ॥ पञ्च गय मिज
लस्त ॥ मरु ॥ ॥ पञ्च वल्लव ॥ कंग खलास्त ॥ मरु ॥ ॐ सर्वं
श्रमगत काय विराम धन स्वादा ॥ ॥ नखा कचि कंग ॥ मरु ॥ ॐ
गों जूं खं ख ॥ ॥ आडाल वन गुठ ॥ श्वे व पीत काष्ठ मदन नखा
॥ आरंजन पूग मद्युता लाजा कृत सर्व धर्म ॥ ॥ य १ ॥ ॥ ॥

पञ्चम
पञ्चम
पञ्चम

वायु तिलक्षन्य तथेव च ॥ एतानि पञ्च गत्या नि युद्धि य कल ॥ ॥
दत ॥ ॥ पञ्च वल्लव ॥ पिलाशि १ द्धन सि २ उदधन सि ३ व ऊशि
४ डाल गत सि २ ॥ श्वेत कल मस्त ॥ ॥ पञ्चम पति ॥ जा क ४ लि क
५ माय रव क्रूर रव अयना जिता हा ॥ ॥ यवा र्जन जतं हर्म यम म
गच ३ रु कि जी ॥ पञ्च वल्लानि मस्तानि युद्धि य कल ॥ ॥ ॥ ॥
४ कात्री च सह दवा यना जिता ॥ द ॥ अत्य लाच मूलानि युद्धि य कल ॥ ॥
धी ॥ ॥ असमूह च वा ॥ मक मधु नाग जंतथा ॥ पञ्च यल्लव माद था

गीतिका
रावना॥

त्यथानामुखः ॥ गन्तः ॥ वैद्यकलमयीवा महता ॥ प्रतवासशी ॥ वरुः
 यत्रिचसत्सुगं सुष्ठु क्व विधिका विधिका विद ॥ ॥ गीलक्रिहावः
 ॥ आदवीयमाहिता नीवात्यवसुनिता सिद्धनयमरुकाय काकिशोरन
 संहिता ॥ लक्ष्मीनीयमायनहिता ॥ पुष्टसुष्टिकसंनिता ॥ अरुदध्यनरु
 लाव ॥ वनधन्यववपुदा ॥ सर्वरुतां गीलक्ष्मिंसावयम् ॥ आ ॥ धा ॥ धू ॥ पूजा
 ॥ आ ॥ गाम ॥ ॐ जां गीथनम ॥ स्वाहा ॥ ॐ जां जी लक्ष्मियनम ॥ स्वाहा ॥
 ॥ मुनि ॥ ॐ गीलक्ष्मी महादवीच ॥ सर्वसंपत्तिदायकी ॥ सर्वकामसुदह

三

[illegible]

२५ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लखनहास्य लघाधनयाय ॥ ६॥ आः सर्वसिद्धिधनीकं रुद्र ॥ ६॥ याय
रुद्रानयक ॥ नायायक ॥ नात्रिजावनक ॥ ६॥ नात्रिकं नरुलायका
॥ ६॥ मय ॥ ६॥ समाधिचलसर्व जिनयुगलीनन ॥ ६॥ ६॥ साहा ॥ ६॥ साहा
॥ ६॥ दहायिष्ठकायसाहा ॥ ६॥ यष्टयका नयुजा ॥ ६॥ निरुल्लयाहा
॥ ६॥ ६॥ ६॥ धनजनकाकीया ॥ ६॥ धनयामङ्गलगाथाननयाय ॥ ६॥
नयानिर्ददिगनास्यविय ॥ ६॥ नावनामनरुनगावक ॥ ६॥ साहासना

वृद्धनरुयाव, लखनहास्य, लघाधनयाय ॥ ६॥ नमः समन्तवृद्धानां ॥
जावल ॥ जावलददसाहा ॥ ६॥ आः ॥ ६॥ साहा ॥ ६॥ धनदीगनास्य ॥ ६॥ धनयहा
वनमय ॥ ६॥ सावोच्चाय ॥ ६॥ नायायक ॥ ६॥ दीवानसमाधिधानयोननस
हा ॥ ६॥ साववनकासावयाय ॥ ६॥ कर्कसाय ॥ ६॥ समयवियमाव ॥ ६॥ वयवक
॥ ६॥ नानय ॥ ६॥ सानमालानदवयामेवसाकासायके ॥ ६॥ गवयग्वानदियदेव
रु ॥ ६॥ निरुल्लयाहाविधिः ॥ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥ धनलीकं ॥ ६॥ नुकीया ॥ ६॥

गोशकधु॥

दुयमलदविशयधीश्वरुचननमिदकं वनामधुयवकं वनादिय
॥ ६ ॥ नादत्र वाथनेकधुवाकीया ॥ ७ ॥ वाथनयुवाकन
न ॥ यत्नामलकमलयाधिसवदकीधुं वकायुधयवत्रासिग
स्यलाक ॥ लाकधुवस्यसुगमस्यसुखात्मकस्य नत्माकलरुवकुन
वमारिधकेः ॥ काकवसवधुवकं वकायुधयवत्रासिग ॥ ल
वस्यस्यवाचक ॥ ६ ॥ सविवनविधधनसवहनवाला नवदय

राकुरुनि॥

हंखाहा ॥ ६ ॥ धर्मोदवधिकवधेखाहा ॥ लमवधकासमहाकावय
वक ॥ रुवसमान ॥ यत्नामलसरुमस्यजिनयकेन सत्तुरुनावम
हमाससरासिनल ॥ धीवलसंरुवजिनस्यविनविनस्य नयका
रुवकुनयवमारिधकेः ॥ नालवामकरुननाचका ॥ रुलकुन
नदावायाकावमाय ॥ ६ ॥ निलकरुयधेखाहा ॥ वननमिद
सनीरुवधरुयधेखाहा ॥ नानारुवधकाकावय ॥ वाकुरुनि

वक्तुं कालनयः श्रवणमकर्तुं निश्चायः ॥ धनयायः कर्तुं देवता
 वदन्तं देवाः कृतमस्तु ॥ यथा कथं जनाधायः मकर्तुं
 कर्तुं ॥ उं सर्ववदन्तं जमणिमहामकर्तुं यमीश्वराहा ॥ यं सर्ववदन्तं
 कर्तुं ॥ उं वदन्तं वदन्तं ॥ उं वदन्तं वदन्तं ॥ उं वदन्तं वदन्तं ॥ उं वदन्तं वदन्तं
 लवदन्तं लवदन्तं ॥ उं यद्वदन्तं लवदन्तं लवदन्तं ॥ उं यद्वदन्तं लवदन्तं लवदन्तं
 लवदन्तं लवदन्तं ॥ यं यथा यथा यथा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१०० दिनां जातम्

॥ धनली देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया ॥ धनली देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया
 ॥ नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया ॥ नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया
 नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया ॥ नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया
 नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया ॥ नमस्तु देवता कर्तुं विष्णु कथा कथीया
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२३ ग ५५॥

यनहिल्लानन वृद्धत्वसमुद्योगक वा आर्याविहाययम् ॥ धनसुख
मविय ॥ उं वृद्धधर्मकीः ॥ मग्वलाकायवविय ॥ उं वृद्धधर्मविय ॥
॥ कसिम्भनामविय ॥ उं वृद्धवत्तु ॥ लीच्छि कृच्छि कृच्छि या आहायक
धनयवायदावयुजा ॥ धनादव ॥ ॐ निवनादशविधिः ॥
धनलीहाविद्यायकयान ॥ यथापि नमधुल ॥ धनवक ॥ खानवायक ॥
वयाकयुजायाचक ॥ धनहाहावययक ॥ नय ॥ सवन्थागला ॥ निम

२४ ग ५५॥

दिका ॥ निस्वराव वाधिवरु नूया विहाययम् ॥ यथापि ॥ यथापि ॥ यथापि ॥
॥ वाधिसत्ता ॥ वासर्व ॥ वृद्धास्त्यधमनामना ॥ वाधिसत्तामहासत्ता ॥
महिषाष्ट ॥ जनिनः ॥ निस्वरावनीलालर्व ॥ सर्वसत्त्वक कावर्ध ॥ नधमास
महाहान ॥ वाधिविरुमिमिम्भर्न ॥ दवदम्भान्नवलीहाविद्याककाव
य ॥ सविलकाका क ॥ यवायदावयुजा ॥ धनादव ॥ नय ॥ ॐ निव
नमादवसमावरुनविधिः ॥ ७ ॥ यत्रियानिनयुजायाचक ॥

२५ निरुद्धो ग ॥

रुदिका कायक ॥ स्यान्नर्मन ॥ समनमयक दक्षिण ॥ आशीर्वाद सिद्धि
मदसवादन सिद्धिजनक ॥ समय ॥ बलि क्लायमनन ॥ समयायक
वर्णक क्लाय ॥ ७ ॥ धनदुसयक क्लाय क्लाय ॥ ८ ॥ ९ ॥
गुरु ॥ १० ॥ सनिक क्लाय बलिनिविष्ट क्लाय ॥ बलि क्लाय
॥ धन अग्नि क्लाय ॥ नयको व वा कलहादिन दहावलि विधान
कथायनायार्थ ७ वाय गुरुमधुल यशगवा सिद्धिमयक लो

आगम ॥ दक्षिण ॥ नमस्तस्मै ॥

बलि क्लाय ॥ विसमाधि क्लाय विवाशन ॥ अग्नि क्लायन अग्नि क्लाय दव
मधुल यज्ञ दवना क्लाय ॥ चय क्लाय ॥ ० ॥ धन सिद्धि वनास
रुदिका कायक मद ॥ स्यान्नर्मन लालमर्थ लावना ॥ नमः स्वददय वयस्य
आः कार विनाश ॥ यमिमादि दवनाम दात्मिका वयसनिथा यः स्वद
दयादत्तु यमिमाद वाः वामया ॥ यद्यववाशन निषय ॥ दव
सत्त्व आः ॥ र्थकाठिन वाहा कनधियक ॥ नीला क्लाय ॥ माल वागम

ॐ ॥ धन लब्ध कश्चिन्नन ददयामात्र सकोत्सायक ॥ लिमिषाया यथा
 कृच्छ्रिन्मयात्र कात्र वकनन यान दीगनायात्र ददनाय
 यदनमासकवक ॥ साञ्जय उंसर्वकथागमकायविद्वान्धनमात्र
 ॥ धन लब्ध कश्चिन्नन ददयामात्र सिद्धेदासावयाय ॥ कोउवकनन द
 दया कवयकासावयास्य द्वासकनसनय ॥ धन यश्च वल्ल यथावृत्त
 र्यवगन्त यश्च गन्तव्यं ज्ञान ॥ यद्वदन्ता ॥ यवमात्रा जमीनम्

+

यत्पृथग्धयववदीयविद्विगन्तः ॥ पूजालिर्नयमिरुमदिवर्म
 ने सुखं कलरुवक्तुनयत्रमात्रिषकः ॥ धनसिद्धिर्नयमासिद्विष
 उं दिष्टवामसखाहा ॥ उंसर्वरुत्रराष्ट्रय (राष्ट्राहा ॥ नानाप्रारुत्ररा
 विय ॥ धनसिद्धिर्नयमात्र ॥ माउकिनीन माउमयवकनय ॥ उंदीन
 त्रविवद्वाना ॥ वेधारु कनमस्तुर्न ॥ यथावर्कयुजनाथय मकटयश्च
 लाङ्कव ॥ उंवदसत्वरु ॥ धनसिद्धिर्नयमात्र ॥ उंजुआमाउम

स्वयाद्वर्णितामानव्यंजनसूत्रं गन्धिमालाविलं विनयः स्वयं
 हा वानालवामनं नावकं वा ॥ धनसमाधमं जनाप्रयत्नं बाल
 लक्ष्मिपानं गन्धं बालसखाननस्य कावना ॥ धनमाकवधमिन्नं वा
 धिचिरुच्यवृथकावयनं वाननाददयस्तुः वीजादव नानालोकधातुः
 लित्वा अकनिष्ठसुवर्नगत्वा धीरुलबीर्णविनयनं वानीलाक्षनं वा
 नसिद्धिस्वार्नयूजा ॥ धनं लाहानसस्वस्मिकवासी जलाप्रयत्नं वा

यस्य स्वतुष्टि यामनयय ॥ गमथाय ॥ ॐ यना धमगमिन्दा काना लाय
यला कनी ॥ गृहीत्वा यागिना यागि, वृद्ध कृत्य यवर्कन ॥ यन सत्वन य
न यहा यायात्म मधुर्ल ॥ नन सत्वन मनाथ, कामात्त यत्रियूत्रय ॥ ० ॥ य
न ययवक, लखि धनयस्य, नाउवान सात्रल, यहु मधु लद यक ॥ न यिन
यकोनस, ॐ यान कान, स्वस्ति व मनस्य, अनीलिन नाय ॥ ॐ यव वृद्ध य
मनिमहावजाष्ठी यवस्य, मिष्ट य हं रु द्वा हा ॥ जात्रहा सान नाय म उक्त

दासमनुष्या वं स्वाहा ॥ गालवा मनसु सग्वनननाय ॥ नवाक ०० य
 गमी ॥ स्ववाकसस्त्रिवाक्ययत्रय ॥ धवथमनियान् गालवा ॥ ००
 गवतुलयावमस्य ॥ यत्रियान् रुन ॥ ० ॥ यनवद्यावननक्यक ॥ यन
 द्वाय ॥ ०० दिद्यान्नन ध्यानसमाधिध्यानयाननस्वाहा ॥ यवायकावपूजा ॥
 ला ॥ ०० नयस ॥ ०० नियाधियरु ॥ ०० विधीविधिः ॥ ००
 यन ॥ ०० कागिशावना ॥ ०० अग्निक ॥ ०० सखान ॥ ०० लन ॥ ०० शावना ॥ ००

शा ३

दिशसिद्धिः वृद्धाविव ०० नयमि ॥ ०० द्वा ॥ ०० यादि ॥ ०० धमन ॥ ००
 आदिन ॥ ०० यिधीदीदाय ॥ ०० द्वा ॥ ०० काग्नय ॥ ०० स्वाहा ॥ ०० यन ॥ ०० काग्न
 निविय ॥ ०० य ॥ ०० ला ॥ ०० य ॥ ०० द्वा ॥ ०० निया ॥ ०० काग्निकिधिः ॥ ००
 ॥ ०० यनम ॥ ०० लस ॥ ०० सानन ॥ ०० शावना ॥ ०० ननः ॥ ०० द्वा ॥ ०० का ॥ ०० व ॥ ०० व ॥ ०० नलि
 य ॥ ०० लिता ॥ ०० अनिष्ट ॥ ०० वन ॥ ०० गता ॥ ०० न ॥ ०० अनादि ॥ ०० सिद्धिः ॥ ०० यथा ॥ ००
 ॥ ०० द्वा ॥ ०० आ ॥ ०० या ॥ ०० यादि ॥ ०० नीला ॥ ०० न ॥ ०० यथा ॥ ०० द्वा ॥ ०० आ ॥ ०० सर्व ॥ ००

ॐ श्री खै वी नमः ॥ २

सर्वगुण
लक्षणम्

॥ मधुलसदं द्रवरात्रयं च काठिहा जात्रयं चान्न ॥ यद्येवमस्मिन्
कौण्डिनस्यैव भगवत्पूजाय स्नानाय ॥ आत्मानं निश्चिन्तयामि पूजयामि
यथा ॥ वृद्धानां मरिचिकम् ॥ जगन्नाथाय वक्षिष्ये ॥ गुणाक नमः ॥ यद्येवमस्मिन्
मथाददध्वं मर्यादि ॥ ॐ निमग्नय वक्ष्ये विधिः ॥ ७ ॥ यद्येवमस्मिन्
निष्ठा रात्रिना ॥ सहस्री जगत्पूजां च जात्रां चान्नमग्नं चान्नं विष्ठादयं जात्रां
गगनमायनिर्गहं ह्य ॥ स्नानाय च यद्येवमस्मिन् ॥ देवकर्म यत्र नमः

वक्ष्ये वक्ष्ये
वक्ष्ये वक्ष्ये ॥

यामिष्टमनु २

युध्यन्ती या कनका मायुज नारि रश्मि ॥ कल्पादिमदकमदं चानिष्ठा
हं नत्मीगर्लरु वरुनयत्र मारि यक ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन्
वक्ष्ये वक्ष्ये ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन्
७ ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन्
महामह ॥ ममायि ग्राहनाथय ॥ स्ववक्ष्ये वक्ष्ये ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन्
मरुव नृयिर्न ॥ स्नानसत्त्वमकीरु न नरुर्न ॥ यद्येवमस्मिन् ॥ यद्येवमस्मिन्

विष्णुमानं वृषवजादिरिः वृषमानं मङ्गलगीर्गलावयन वासा
 य ॥ यत्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 यत्तु ॥ कर्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 रियेकः ॥ यत्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 रियेकः ॥ यत्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग

डंकर्मावजिअरि विः ३३३३ ॥ अरि विः ३३३३ ॥ अरि विः ३३३३ ॥
 व्याकौयूजनाथिय मकटयशकला रुदं ॥ डंकः वज्रम कठारि वि
 स्रवमस्तुमर्द ॥ डंकः वज्रम कठारि वि
 ॥ ७ ॥ यत्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 वृषकीयाकवर्गमाशुजिग
 नृगवसर्क ॥ ७ ॥ यत्तुगर्गलदिम कर्तव्यवर्मयविर्ग वृषकीयाकवर्गमाशुजिग

ॐ वज्राधियमिहामरिषिश्चमि निष्ठवज्रसमस्तं वज्रघण्टा
गृहीतासिमयारुगवनमयिसन्निहिता रुद्रः ॥ घण्टाधिय ॥ घण्टा
धकः ॥ ७ ॥ वज्रसत्त्वहामरिषिश्चमि वज्रनामा रियकटः ॐ
अमकवज्रनामनथागनत्तु रुद्रः ॥ अमननवक ॥ नामारि अ
॥ ७ ॥ यानिमादिदवनां सवज्रवज्रघण्टा लक्षणं कानमृदाया
ननालिनयविश्रायः ॥ ननः सुयविशिष्टवज्रखाहा ॥ लवमन

॥ आवायारिषकः ॥ ७ ॥ नदन्वकपायारिषकः ॥
कीनघन सविद्यवेवाचनादि नथागनत्तु वनावानादि
दवीरुन महासुखमनरुन वज्रयनाया ॐ लुह वाधिविरुद्र
निमादवनायामरिषिश्चमि वनयन ॥ लुहकारिषकः ॥ ७ ॥ नन
रुनवज्रसत्त्वनायनी नदद्याः समायनाया लुहनिमादिदवनाया सवज्र
नदमयत्तमधिमुत्थन ॥ यहाहा नालिषकः ॥ ७ ॥ नदन्वक

रुनायमिमादिकं वरुथल्लोषस्वदूया यमिमादिदवर्गा यदीन
न यवमहास्वमय ॥ १० ॥ कवृणकवृणमाधि मधिम् ॥ ११ ॥
॥ १२ ॥ ॥ यथादियुजा ॥ १३ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥
॥ १४ ॥ ॥ यथादियुजा ॥ १५ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥
॥ १६ ॥ ॥ यथादियुजा ॥ १७ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥
॥ १८ ॥ ॥ यथादियुजा ॥ १९ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥
॥ २० ॥ ॥ यथादियुजा ॥ २१ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥

सर्ववामन नृपानः ॥ १ ॥ न त्वनसिद्ध मरु मयन मरु मयन ॥ २ ॥
यन रुज मानन हाजा व य मय ॥ ३ ॥ यथन रुज मानन हाजा व य मय ॥ ४ ॥
यसिद्धय ॥ ५ ॥ सर्वसत्त्व मना यायि ॥ ६ ॥ सर्वसत्त्व कदि स्त्रि नः ॥ ७ ॥ सर्वसत्त्व नि
व कामा गुण ममया सिद्धः ॥ ८ ॥ यन रुज मानन हाजा व य मय ॥ ९ ॥
न सत्य न मनाथ कामा त्वयि विष्ट व यन ॥ १० ॥ यन रुज मानन हाजा व य मय ॥ ११ ॥
य व सृष्ट कान द व य स्य ॥ १२ ॥ वरु नाथ जे दन ॥ १३ ॥ मान माला जा दन ॥ १४ ॥